e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना

RACHANA CHOUDHARY

HINDI SAHITYA, PG IN 2017 & NET IN JUNE 2022, INDIA

सार

उनकी दृष्टि में नारी त्याग एवं बलिदान की मूर्ति है । क्योंकि वह स्वयं क्षमा और सहनशीलता की साक्षात देवी है । इसीलिए प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में स्त्रियों के प्रति विशेष सहानुभूति दर्शायी है ।। मुख्यतः हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी संवेदनाओं का गूंजन प्रेमचन्द के उपन्यासों से ही प्रारम्भ हुआ है ।

परिचय

08 अक्टूबर आज प्रेमचंद को याद करने का विशेष दिन है. आज उपन्यास विधा के युगपुरुष एवं महान कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की पुण्यतिथि है. 31 जुलाई के दिन प्रेमचंद ने लमही में एक फटेहाल परिवार में जन्म लेकर तत्कालीन फटेहाल भारत को न सिर्फ जिया बल्कि उस समाज का जीता-जागता दस्तावेज हमेशा के लिए पन्नों पर दर्ज कर दिया. उस समय जब भारत उपनिवेशवाद और उसकी जनता उपनिवेशवाद की अनिवार्य बुराई सामंतवाद के चंगुल में फंसी छटपटाहट रही थी, उसको अपनी मुक्ति का मार्ग दिख नहीं रहा था वह सिर्फ हाथ-पैर मारकर अपनी छटपटाहट को व्यक्त कर रहा था. उस समय प्रेमचंद आचार्य शुक्ल, जयशंकर प्रसाद और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे साहित्यकार महात्मा गांधी के जनांदोलनों को विचारों की ऊर्जा ही प्रदान नहीं कर रहे थे बल्कि जनता को उसकी सामर्थ्य-शक्ति का अहसास कराकर राष्ट्रीय आंदोलनों को सशक्त कर रहे थे.[1,2,3]

प्रेमचंद को याद करने के लिए दिन विशेष की जरूरत नहीं है, वह इतने प्रासंगिक हैं कि रोजमर्रा के घटनाक्रम में अनायास ही याद आ जाते हैं. प्रेमचंद-युगीन 2030 के दशक का वह समाज कमोबेश आज भी वैसा ही है, वही छटपटाहट, वही मजबूरी, वही गरीबी और होरी की भांती तिल-तिल मरते किसान आज भी हमारे समाज का एक कटु किंतु अनिवार्य यथार्थ है, थोड़े-बहुत अंतरों के साथ. इन यथार्थो से भी सबसे कटु व मन को विचलित करने वाला यथार्थ, हमारे मुँह पर तमाचा यथार्थ है कि तब हम विदेशी सत्ता के गुलाम थे किन्तु आज अपनों के द्वारा ही शोषित, वंचित और ठगे जा रहे हैं हास्यास्पद है कि तब हमारे प्रशासक हमारी मर्जी के बिना बनते थे आज हम स्वयं चुन रहे हैं, लेकिन आम जनता के शोषण कि स्थिति कमोबेश वही बनी हुई है.

किसान, मजदूर, दलित, आदिवासी और स्त्रियाँ समाज में तब भी हासिए पर थे आज भी हासिए पर ही हैं. तब हासिए पर जाने का दंश इतना तीव्र नहीं था क्योंकि हमारी तथाकथित सरकारों ने हमें कर्मफल या भाग्यफल जैसे झुनझुने दे रखे थे और हम अपने दुःख-दर्द, विपत्ति को ईश्वर या कर्म का न्याय विधान मानकर होरी की भांति सबकुछ चुपचाप सह लेते थे, आज वह दंश और अधिक गहरा इसलिए है क्योंकि शिक्षा ने हमारे हाथों से झुनझुने तो छीन दिये किन्तु वे सशक्त हथियार या साधन बदले में नहीं दिये जिससे हम उस दंश से मुक्ति पा सकें. प्रेमचंद ने जो तब रचा, वह किसी न किसी रूप में आज भी प्रासंगिक है. उनकी प्रासंगिकता ही उनको सबसे प्रिय कथाकार बनाती हैं. ठाकुर का कुंआ की गंगी तब जितनी विवश और दलित थी क्या हम कह सकते हैं कि वह समाज नहीं है?

आये दिन अखबारों व समाचार पत्रों में उससे भी अधिक वीभत्स घटनाएँ देखने-सुनने को मिलती हैं, वह भी तब जबकि एक मौन सहमति उन लोगों के द्वारा प्रताड़ना करने वालों को मिलती है जिनके कंधों पर यह सब खत्म करने की जिम्मेदारी है. हाथरस की बीभत्स घटना हो या कुछ समय पूर्व ही किसी न्यूज चैनल पर चल रही खबर कि यू०पी० में आगरा से 30 किमी दूर एक गाँव में एक अनुसूचित जाति की महिला का शव चिता से उतरवा दिया गया क्योंकि ठाकुरों को यह सहन नहीं हुआ कि अनुसूचित जाति किसी व्यक्ति का शव उनकी शमशान भूमि पर जले, अब यहाँ पर गंगी और इस मृतका के साथ हुए घटनाक्रम पर गौर कीजिये, आप स्वयं निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रेमचन्द की गंगी और 2020 की इस अनुसूचित महिला में मूलतः क्या अंतर हैं? हमारी संवेदनाएँ किस हद तक रसातल में जा चुकी हैं.

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

यह बात सत्य है कि कथा में लेखकीय टिप्पणियाँ कथा के घटनाक्रम के आधार पर होती हैं जबकि निबंधकार के रूप में वह व्यक्तिगत विचारों को स्पष्टता से संप्रेषित कर पाता है. प्रेमचंद का निबंध साहित्य लगभग 1700-1800 पृष्ठों तक फैला है और संभवतः एक आम पाठक ने उसमें से मात्र दो-चार ही निबंध पढ़े होंगे.

प्रेमचंद को अधिकांशतः हम सिर्फ कथाकार के रूप में पढ़ते और समझते हैं. प्रेमचंद का कथा-साहित्य निश्चित रूप से इतना वृहद, व्यापक और संवेदनशील है कि उनके निबंधकार का रूप थोड़ा उपेक्षित सा हो जाता है. यदि प्रेमचंद को समग्र रूप से पढ़ा जाय अर्थात उनकी कहानी और उपन्यासों के साथ-साथ उनके निबंधों को भी रखा जाय, तो प्रेमचंद समग्र रूप से हमारे, सामने आते हैं. यह बात सत्य है कि कथा में लेखकीय टिप्पणियाँ कथा के घटनाक्रम के आधार पर होती हैं जबकि निबंधकार के रूप में वह व्यक्तिगत विचारों को स्पष्टता से संप्रेषित कर पाता है. प्रेमचंद का निबंध साहित्य लगभग 1700-1800 पृष्ठों तक फैला है और संभवतः एक आम पाठक ने उसमें से मात्र दो-चार ही निबंध पढ़े होंगे.

प्रेमचंद ने अपने निबंधों के माध्यम से बड़ी सहजता के साथ अपने समाज और उसमें अपेक्षित सुधार को पाठकों से साझा किया है, उनका समय वह समय था जब स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह और तलाक जैसे मुद्दे बहस का विषय तो बनने लगे थे किन्तु एक निश्चित 'स्टैंड' कोई नहीं ले पा रहा था. स्त्री शिक्षा को लेकर अधिक असमंजसता थी, कि उसे एक 'आदर्श नारी' बनाने वाली भारतीय शिक्षा दी जाये या पाश्चात्य शिक्षा? ऐसे में प्रेमचंद स्पष्ट रूप से स्त्री शिक्षा के मुद्दे को स्टैंड के साथ उठाते हैं और लड़कियों को पढ़ाने की वकालत करते हैं. आज जब कुछ लोग प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर सवाल उठाने लगे हैं, कुछ उन्हें दलित विरोधी, स्त्री-विरोधी और 'परम्परा पोषक' जैसे अलंकरणों से नवाजकर अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं, उन्होंने या तो प्रेमचंद को समग्रतः पढ़ा नहीं है या तो यह सब साजिशन कर रहे हैं.

खैर, बात प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि और स्त्री-पात्रों की हो रही है, तो मैं प्रेमचंद के व्यक्तिगत जीवन के प्रसंग को भी उठाना चाहूंगी, उन्होंने माँ के रूप में विमाता का स्नेह-तिरस्कार सब झेला तो पत्नी के रूप में उनकी पहली पत्नी से कभी नहीं बनी. हाँ शिवरानी देवी के रूप में उन्हें एक आदर्श सहयोगी मिली. प्रेमचंद के निजी जीवन की इन घटनाओं ने भी प्रेमचंद की स्त्री-दृष्टि निर्मित करने में बड़ी भूमिका निभाई है. प्रेमचंद ने समाज के हर वर्ग को प्रतिनिधित्व अपने कथा साहित्य में दिया है और यथार्थता के आधार पर दिया है. उनके पात्र तब भी जीवंत थे और आज भी जीवंत हैं इसमें कोई दो राय नहीं.[4,5,6]

"नारी का आदर्श है एक ही स्थान पर त्याग, सेवा और पवित्रता का केन्द्रित होना" और इस कथन के आधार पर प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि को रूढ़िवादी घोषित कर दिया जाता है, किन्तु ऐसा ही अगर होता तो प्रेमचंद न तो सिलिया की जीत का चित्रण करते, न झुनिया जैसी विधवा का और न मालती जैसी प्रगतिशील नारी का.

माँ, पत्नी, बहन, प्रेमिका, शिक्षिका, वेश्या, जितने रूप महिलाओं के हो सकते हैं वे सब प्रेमचंद के साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं, और उनका विश्लेषण बुद्धिजीवी कुछ रटे-रटाये उद्धरणों के आधार पर कर देते हैं, उनमें से एक उद्धरण जो अक्सर दोहराया जाता है वह है- "नारी का आदर्श है एक ही स्थान पर त्याग, सेवा और पवित्रता का केन्द्रित होना" और इस कथन के आधार पर प्रेमचंद की स्त्री दृष्टि को रूढ़िवादी घोषित कर दिया जाता है, किन्तु ऐसा ही अगर होता तो प्रेमचंद न तो सिलिया की जीत का चित्रण करते, न झुनिया जैसी विधवा का और न मालती जैसी प्रगतिशील नारी का.

दरअसल एक बंधे-बंधाये ढांचे में रखकर हम प्रेमचंद को जब तक पढ़ेंगे तब तक हमारी दृष्टि संकुचित और सीमित ही रहेगी. प्रेमचंद जब लिख रहे थे उस समय और आज भी समाज में वुधिया, धनिया, सिलिया, मालती, सोना, रतन आदि सभी स्त्रियाँ मिलती हैं और उसी हाड़-मांस की बनी मिलती हैं जिससे वो सारी स्त्रियाँ बनी थी. उनमें मानवमात्र की सभी सबलताएं और निर्बलताएं मौजूद हैं. धनिया का चरित्र होरी से कहीं अधिक मुखर है, जो अपने परिवार के लिए हर प्रकार का त्याग करती है और अंत में हाथ आती है सिर्फ निराशा, दुख और वैधव्य. इस कोरोना काल में कई धनियाओं को सड़कों पर जूझते, संघर्ष करते तथा अपने अधिकार के लिए आवाज उठाते हुए भी देखा, भले ही वह आवाज धनिया की ही आवाज की भांति नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह रह गई.

मालती के संदर्भ में फिर एक वही रटा-रटाया उद्धरण लिया जाता है- "बाहर से तितली और अंदर से मधुमक्खी" और इस आधार पर प्रेमचंद को संकुचित स्त्री दृष्टि वाला घोषित कर दिया है. मालती जैसे सशक्त चरित्र को रचने वाले इस रचनाकार के प्रति यह अन्याय नहीं तो और क्या है? मालती, तितली है अपनी सुंदरता और कमनीयता में, जो जैविक रूप से स्त्री होती है, और साथ ही साथ स्वतन्त्रता स्वच्छंदता में, जो नारी का अधिकार है, ठीक वैसी ही स्वच्छंदता और स्वतन्त्रता जैसे पुरुष को प्राप्त है, प्रेमचंद मालती के चित्रांकन द्वारा कितनी बड़ी क्रांतिकारी परिवर्तन की बात कर रहे हैं, यह दृष्टव्य है. मालती पढ़ी-लिखी महिला जो अपने निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है और वह उन निर्णयों का साधिकार लेती भी है, चाहे वह मेहता के साथ रहने का निर्णय हो या उसे त्यागने का.

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

सेवासदन की सुमन अपने परतंत्र जीवन से बेहतर उस वेश्या के जीवन को मानती है जो स्वतंत्रतापूर्वक जीवन जी ही नहीं सकती बल्कि अपने निर्णय भी ले सकती है. आज के स्त्री विमर्श के मुख्य बिन्दु को सर्वप्रथम स्वर दिया प्रेमचंद ने. आज के समाज में 'सुमन' का व्यक्तित्व निखरा है और आत्मनिर्णय, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास से लबालब जीवन के हर क्षेत्र में दस्तक देती नारी के कई प्रारम्भिक पाठ प्रेमचंद की नारी पात्रों में परिलक्षित होती है. 'गबन' की जालपा को आभूषण प्रिय नारी के रूप में सदियों से यह विद्वत समाज पढ़ता और पढ़ाता आ रहा है किन्तु जालपा के त्याग और स्वाधीनता संग्राम में अपने पति को दिये गये सहयोग को कहीं रेखांकित नहीं किया जाता. इसी उपन्यास की 'रतन' वह महिला पात्र है जो पति की संपत्ति पर पत्नी के अधिकार का प्रश्न उठाती है.

प्रेमचंद का स्त्री विमर्श उस भारतीय समाज का स्त्री विमर्श है जो नवजागरण की शुरुआती लहरों से आप्लावित हो रहा है. सदियों से पर्दे में रही नारी की शिक्षा, उसके आत्मावलंबन की बात करना ही अपने-आप में बड़ा क्रांतिकारी विचार था, प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में समाज के हर तबके की नारी को तत्कालीन यथार्थता के साथ चिन्हित किया और भविष्य के विकास के लिए एक नई रूपरेखा प्रस्तुत की.

प्रारम्भिक नारी-पात्रों में 'प्रेमा' , 'वरदान' की सुशीला, माधवी विरजन आदि प्रेमचंद युगीन आदर्श नारी की प्रतिनिधि पात्र हैं, किन्तु मालती उसकी बहन सरोज एवं वरदा, रंगभूमि की सोफिया आदि स्त्री विषयक शहरी निर्णय की संकल्पना को चरितार्थ करती है वहीं ग्रामीण परिवेश में धनिया, झुनिया, सिलिया, फूलमती और मीनाक्षी सशक्त पात्र हैं, जो आज की नारी की भांति संघर्ष करती हैं, भले ही तत्कालीन देशकाल परिस्थितियों के अनुसार वे सर्वत्र विजयी नहीं होती हैं. मीनाक्षी तो उस समय में भी इतनी आक्रमक है कि अपने अय्याश पति को हंटर से मारती है.

कहा जा सकता है कि प्रेमचंद का स्त्री विमर्श उस भारतीय समाज का स्त्री विमर्श है जो नवजागरण की शुरुआती लहरों से आप्लावित हो रहा है. सदियों से पर्दे में रही नारी की शिक्षा, उसके आत्मावलंबन की बात करना ही अपने-आप में बड़ा क्रांतिकारी विचार था, प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में समाज के हर तबके की नारी को तत्कालीन यथार्थता के साथ चिन्हित किया और भविष्य के विकास के लिए एक नई रूपरेखा प्रस्तुत की. यह सच है कि आज लगभग सौ वर्षों के अंतराल में हुए परिवर्तन और विकास को उनके साहित्य में लक्षित नहीं किया जा सकता, लेकिन उन्होंने इस परिवर्तन की आहात को महसूस किया और हर कालजयी रचनाकार की भांति उसके भावी स्वरूप की रूपरेखा भी प्रस्तुत की.

कोरोनाकाल में अपने जेवर बेचकर बेटे को दिल्ली से रामनगर लाने वाली माँ की भांति माँ भी प्रेमचंद की कहानी में है तो अपनी स्वतन्त्रता और विचारों की रक्षा करने वाली लाखों मालतियाँ हैं जो किसी पर आश्रित नहीं हैं. वस्तुतः स्त्री विमर्श में प्रेमचंद का योगदान नींव के पत्थर की भांति है और इस कथन की सत्यता हम तभी प्रमाणिक पा सकेंगे जब हम प्रेमचंद को समग्रता से पढ़ेंगे और समझेंगे. प्रेमचंद ने अपना पूरा जीवन नहीं जिया था मात्र 56 वर्ष में जो कुछ देखा भोगा और चिंतन के माध्यम से पाना चाहा उसे लिपिबद्ध कर दिया.

नारी में अधिकार सजगता एवं स्वयं निर्णय लेने की क्षमता की पहल मुंशी प्रेमचंद ने ही की, जो आज की नारी के सशक्त व्यक्तित्व के दो सबसे बड़े पहलू हैं.[7,8,9]

इसलिए प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर सवाल उठाने वाले विद्वतजनों से आग्रह यही है कि वह टुकड़ों में प्रेमचंद को न समझें बल्कि उनके समाज के संदर्भ में उन्हें देखें, वह उस समाज में "यौन सुचिता" के प्रश्न को नहीं उठा सकते थे, और न उन्होंने उठायी है किन्तु मिस मालती के माध्यम से एक ऐसी सशक्त नारी की संकल्पना प्रस्तुत की है जो अपनी इच्छा से किसी के साथ रह सकती है और अपनी इच्छा से उसे छोड़ भी सकती है. नारी में अधिकार सजगता एवं स्वयं निर्णय लेने की क्षमता की पहल मुंशी प्रेमचंद ने ही की, जो आज की नारी के सशक्त व्यक्तित्व के दो सबसे बड़े पहलू हैं.

विचार-विमर्श

आज की नारी आत्मनिर्भर है। उसमें कुछ कर गुजरने का साहस है। अगर वो जर्जर रुढ़ियों का विरोध करती है तो अपने लिए नए आकाश का निर्माण भी करना जानती है पर पुरुष से अलग होकर नहीं उसके साथ। ये किसी से डर कर नहीं सब से मिलकर रहना चाहती हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

नारी मुक्ति आन्दोलन महिलाओं के बदलते सन्दर्भों से सम्बन्धित आन्दोलन है। जून 1975 में मैक्सिको में 130 देशों की छह हजार प्रमुख महिलाओं का एक वृहद सम्मेलन हुआ। सन् 1980 में कोपनहेगन में विश्व महिला सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें एक सौ पैंतालीस देशों ने भाग लिया। इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, व रोजगार संबंधित अड़तालीस प्रस्ताव पारित हुए। महिला अधिकारों, बच्चों की सुरक्षा, पुरुष के समान महिला को वेतन, स्वतन्त्रता इत्यादि के लिए प्रति वर्ष 8 मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है। भारतीय महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद् उन्नीसवीं सदी की पहली संस्था थी इसकी स्थापना श्रीमती टाटा दौरान के सहयोग से हुई। श्रीमती एनी बीसेंट, श्रीमती सरोजनी नायडू, श्री जी. के. देवधर, मोहनदास करमचन्द गाँधी आदि समाज सुधारकों ने घर की चहारदीवारी में घुटती नारी को समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। 1950 में स्वतन्त्र भारत के संविधान में नारी को पुरुष सदृश अधिकार तो दिए गए किन्तु लिंग भेद के कारण उसे व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सका। नारी अस्मिता को गरिमा प्रदान करने के लिए राजनीतिक-सामाजिक स्तर पर सरकारी-गैर सरकारी सामाजिक संगठनों ने अनेक आन्दोलन किए जिनके माध्यम से स्त्री शिक्षा, समानता, स्वतंत्रता पर विचार किया गया। नारी को सदियों से जिन परम्परागत रुढ़ियों में जकड़ा गया था उनसे मुक्ति इतनी सहज नहीं थी। काल प्रवाह के साथ नारी ने यह अनुभव किया कि घर-परिवार के साथ ही राष्ट्र देश समाज जाति के लिए भी उसे महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए अतः उसने अपनी प्रतिभा से स्वयं को पुरुषों के समकक्ष खड़ा कर दिया। स्वतंत्रता के उपरांत नारी व्यक्तित्व में सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर पर परिवर्तन दिखाई दिया। उसने समस्त घर परिवार की जिम्मेदारियों को वहन करने के साथ-साथ बाहर निकल कर नवीन परिस्थितियों के साथ समझौते किए तथा व्यक्तिगत चेतना के परिणाम स्वरूप अपनी अस्मिता की तलाश में जुट गई।

हिंदी साहित्य नारी के इसी बदलते संघर्षपूर्ण पड़ावों का साक्ष्य है। पुरुष रचनाकारों के साथ ही महिला लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के बदलते स्वरूप को लिपिबद्ध किया। जिन लेखिकाओं ने परिस्थितियों के मध्य बनते बिगड़ते पारिवारिक संबंधों, प्रेम संबंधों, मर्यादाओं व नैतिक मूल्यों के विभिन्न पक्षों को अपनी दृष्टि से देखने परखने का प्रयास किया उन में राजेंद्र बाला घोष, होमवती देवी, शिवरानी देवी, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा किरण खान, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, दीप्ति खण्डेलवाल, मृणाल पाण्डे, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा, सूर्यबाला, मेहरुन्निसा परवेज, मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री, नासिरा शर्मा, अलका सरावगी, महादेवी वर्मा, गीतांजलि श्री इत्यादि के नाम उदाहरण स्वरुप लिए जा सकते हैं। स्त्री लेखन एक सामाजिक सत्य और नारी द्वारा अपनी अस्मिता की सुरक्षा की चुनौती के रूप में अस्तित्व में आया। स्त्री ने समाज, परिवार और उनके मध्य अपने स्थान को अपने दृष्टिकोण से देखना चाहा। सदियों से पितृसत्तात्मक व्यवस्था में वर्ग, धर्म, मूल्यों व संस्कारों के नाम पर उसका शोषण होता आया है। स्त्री कथाकारों ने अपनी कहानियों में समाज के सभी पक्षों को सूक्ष्मता से उद्घाटित किया है। श्रीमती सुबीरा, श्रीमती ललिता देवी, सुश्री कृष्णा कुमारी, श्रीमती गौरी देवी, श्रीमती गार्गी बाई, श्री चित्रकूट की बुढ़िया ने कहानियों में सामाजिक कुरीतियों (पर्दा प्रथा, दहेज, बाल विवाह) पुनर्जन्म, दान, पूजा, धार्मिक कर्मकाण्ड, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, वीरांगनाओं की वीरता, साहस, दृढ़ता आदि को अपना विषय बनाया। श्रीमती सुबीरा की 'उत्तम क्या है?' कहानी वर्णाश्रम धर्म की सापेक्षता में कर्त्तव्य पालन की श्रेष्ठता सिद्ध करती है। श्रीमती ललिता देवी की 'चतुर बहू' की कथा नायिका धर्मात्मा सेठ की पुत्री थी किंतु उसके ससुराल वाले याचक को द्वार से निराश लौटा देते थे। कथान्त में वह अपने घरवालों को दान की ओर प्रवृत्त करने में सफल होती है। कहानी में दान के महत्व को स्पष्ट किया गया है। सुश्री कृष्णा कुमारी ने अपनी लघु कहानी 'रामदीन की कहानी' में ऐसे वृद्ध पुरुष का अंकन किया है जो ना केवल स्वयं धर्मानुसार व्यवहार करता है अपितु अपने संपर्कागत व्यक्तियों को भी सत्पथ पर चलने के लिए प्रेरित करता है। छद्म नाम से कहानी लिखने वाली चित्रकूट की बुढ़िया की 'विशाखा', 'पहले जन्म की कथा', 'मेरी ओर मत देखो' तथा 'सुभद्रा कुमारी' चार धार्मिक कथाएं उपलब्ध हैं। सभी धार्मिक एवं नीतिपरक कहानियां यद्यपि तदयुगीन संकुचित मानसिकता को चित्रित करती हैं किंतु उसके निराकरण का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करती। इन कथा लेखिकाओं ने जातीय गर्व से प्रेरित होकर महारानी दुर्गावती, वीर धात्री पन्ना, महारानी पद्मिनी, कृष्णा कुमारी आदि वीरांगनाओं तथा पौराणिक प्रसंगों को अपनाकर भी कहानियों का सृजन किया। इस समय की पौराणिक और ऐतिहासिक कथा लेखिकाओं में श्रीमती ज्वाला देवी, श्रीमती सत्यवती (वीर माता), श्रीमती जानकी देवी कृत (प्रभावती) श्रीमती सरस्वती देवी (सुनीति) आदि के नाम समादर से लिए जा सकते हैं। भारतेन्दु व द्विवेदी युग में राष्ट्रीय विचारधारा से अनुप्राणित होकर साहित्य लिखा गया किन्तु उस समय महिलाओं का योगदान नगण्य रहा। घर परिवार के सीमित परिवेश, सामाजिक कुरीतियों, अध्ययन की सुविधाओं के अनुपलब्ध होने पर भी कुछ शिक्षित महिलाओं में सामयिक राजनीति और तत्संबंधी गतिविधियों के प्रति समुचित जागरूकता मिलती है। गांधीजी के प्रभाव स्वरूप स्त्रियों ने घर की चारदीवारी से बाहर निकल समाज की मुख्यधारा में अपनी उपस्थिति दर्ज की और स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया। यह वह समय था जब कई महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीयता और घर परिवार व समाज में अपनी स्थिति के स्वर को बुलंद किया।[10,11,12] सुश्री जवन्द कौर की 'घंटी बज गई', वनलता देवी की 'नवीन नेता', तथा हेमन्त कुमारी चौधरानी की 'हिंदी माता का विलाप' इसी श्रेणी की रचनाएं हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'नील देवी' नाटक में 'नारी पुरुष सम हो हीं' कहकर स्त्री को पुरुषों के समकक्ष

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

खड़ा किया। उन्होंने स्त्री के लिए 'बाला बोधिनी' नामक पत्रिका का शुभारंभ किया। कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों का अंकन कर समाज द्वारा उस पर हो रहे शोषण का विरोध किया और उसे सबलीकृत करने का प्रयास किया। गोदान उपन्यास की धनिया, मालती, झुनिया हो या पूस की रात की मुन्नी सभी सतेज, सक्रिय, साहसी और कर्मठ हैं। जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, इलाचन्द जोशी, की कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों- बेटी, पत्नी, प्रेमिका, मां, विधवा, वेश्या इत्यादि के आंतरिक पक्ष को उद्घाटित किया गया है। जैनेंद्र ने नारी के उस परंपरागत रूप का खंडन किया है जहां उसे देवी मानकर पूजा जाता था। उन्होंने नारी को घर परिवार पति के बंधनों से मुक्त कर अपनी स्वतंत्र अस्तित्व के लिए सचेत दिखाया है। उन की 'ग्रामोफोन के रिकॉर्ड' की विजया पति की इच्छाओं का अनुगमन करती है किंतु घर के एकांत वातावरण में उसकी कामना है कि उसका पति उसके साथ घूमने जाएं। अज्ञेय की 'सेज' कहानी की नायिका अपने सामाजिक दायित्वों का वाहन करते-करते इतनी निराश और कुंठित हो उठती है कि वह इस दमघोंटू नीरस वातावरण से दूर जाना चाहती है। 'पगोडा वृक्ष' की विधवा भी अपने साथ होने वाले सामाजिक अन्याय से दु:खी है। इलाचंद्र जोशी की कहानियों में उनकी स्त्री पात्राएं पुरुष द्वारा प्रवंचित हैं। आर्थिक रूप से सबल ना होने के कारण उन्हें विभिन्न प्रकार की यातनाओं को सहना पड़ता है। चौथे विवाह की पत्नी, डॉक्टर की फीस, क्रय-विक्रय कहानियों में इसी समस्या को उद्घाटित किया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत नारी को घर और बाहर दोनों स्थानों पर संघर्ष करना पड़ा। पुराने जर्जर मूल्यों के मध्य अपने लिए नए मूल्यों को तलाशती, जर्जर रुढ़ियों का विरोध करती नारी का सूक्ष्म और व्यापक अंकन करने वाले कथाकारों में राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, मन्नु भंडारी, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा आदि का नाम समादर से लिया जा सकता है। राजेंद्र यादव ने 'सारा आकाश' की प्रभा, उखड़े हुए लोग, एक इंच मुस्कान उपन्यासों तथा प्रतीक्षा, कुलटा, एक कटी हुई कहानी, मैं वहां नहीं हूं, जहां लक्ष्मी कैद है, 40 साल बाद, हासिल आदि कहानियों के माध्यम से नारी के इस परिवर्तित स्वरूप को लिपिबद्ध किया। इन रचनाओं में अंधविश्वासों, परंपराओं, संकीर्ण भावनाओं के विरोध के साथ ही नारी उत्पीड़न, बाल विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री शिक्षा, स्त्री-पुरुष संबंधों जैसे प्रश्नों को भी उठाया गया है। 'हासिल ' कहानी एक बूढ़े लेखक और छोटे कस्बे की उसकी पाठिका की कहानी है। पत्रों के आदान-प्रदान से प्रारंभ हुआ उनका संबंध बाद में प्रेम में बदल जाता है। उनकी नारी कमजोर बेबस नहीं है। वह अपने आप को, अपनी संभावनाओं को खोजती है, अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेती है और आत्माभिमान से जीवन जीती है। राजेंद्र जी की नारी पुरुष के एकालाप को मौन रह कर स्वीकार नहीं करती अपितु उसके साथ संवाद की स्थिति बनाती हैं। 'तनाव' कहानी में मैसेज सिन्हा 'वह हरम में रखी मैना नहीं है' कह कर स्त्री के महत्वपूर्ण सम्मान जनक सामाजिक स्थिति की मांग करती है। राजेंद्र जी स्त्री पुरुष के परंपरागत स्टीरियोटाइप संबंधों को अस्वीकार करते हैं। टूटना, किनारे से किनारे तक, छोटे-छोटे ताजमहल, एक कटी हुई कहानी, लौटते हुए भविष्य के आसपास मंडराता अतीत, सदृश्य कहानियों में संबंधों के मध्य पसरे अकेलेपन, संवादहीनता और संवेदनहीनता को उन्होंने विश्लेषण किया है। कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में सामान्य जन समुदाय के जीवन की व्यथा को पूरी संवेदना के साथ उजागर किया है। उन्होंने निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों की स्थितियों, नयी बदलती सामाजिक विषमताओं, नारी मनोजगत की व्यथा के मध्य अपने लिए सचेत नारी को रेखांकित किया है। कमलेश्वर के मतानुसार "आज नारियां नितांत प्रामाणिक सन्दर्भों और जीवन प्रसंगों से जुड़ी हुई हैं, जो पुरुष माध्यम से जीवन मूल्यों या उसके अर्थों की खोज में तृप्त नहीं हैं। औरतें, अब औरतें हैं, वे झूठी सती या वेश्याएं नहीं हैं। अब संबंधों के ध्रुव दो हैं, स्त्री और पुरुष, जो विसंगतियों और संगतियों के साथ अपनी प्राकृतिक अपेक्षाओं से सीधे-सीधे संबद्ध है। (बीसवीं सदी की स्वतंत्र नारी कथा साहित्य के आईने में, डॉ कल्याणी जैन, पृष्ठ 153) कहानियों के सदृश्य ही कमलेश्वर के उपन्यासों में भी नारी के बदलते स्वरूप को परिलक्षित किया जा सकता है। इनके पात्र अधिकांशतः निम्न मध्यवर्गीय हैं अतः पाठक को जाने पहचाने लगते हैं। इन उपन्यासों में नारी जीवन के विभिन्न चित्रों को लिपिबद्ध किया गया है। सुबह-दोपहर-शाम उपन्यास में कमलेश्वर ने नारी के देश प्रेम को उजागर किया है बड़ी दादी जसवंत की अम्मा और शांता तीनों परियों की नारियों का परंपरागत भारतीय मानवीय मूल्यों और संस्कारों से गहरा अनुराग है। कमलेश्वर की नारी अपने अधिकारों की प्राप्ति और अस्तित्व की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है। वह अपने निर्णय स्वयं लेती है चाहे वह पति चुनने का प्रश्न हो या कार्यक्षेत्र का चुनाव हो। कह सकते हैं कि कमलेश्वर की पात्राएं जीवंत है। डाक बंगला उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार की आधुनिका इरा की कहानी है जिसके जीवन में तीन पुरुष आते हैं। इसमें नारी के दयनीय जीवन में हमेशा किसी पुरुष कवच की चाह को अभिव्यक्त किया गया है। इरा अपने पिता का विरोध कर विमल के साथ रहने लगती है। विमल के जाने के बाद अन्य लोगों से उसके संबंध बनते हैं। हर पुरुष उससे प्रेम करता है किंतु स्थायित्व देने से घबराता है। स्वतंत्रता और असंतुष्टि उसे डाक बंगले सदृश्य बना देती है। 'एक सड़क सत्तावन गलियां' उपन्यास विभाजन पूर्व भारत का चित्र है। बंसिरी लॉरी ड्राइवर सरनाम सिंह से प्रेम करती है पर उसका विवाह रंगीले से हो जाता है। पुरुष सत्तात्मक समाज में उसे अपने मनोनुकूल जीने की स्वतंत्रता नहीं है अतः वह अपनी परिस्थितियों से समझौता कर लेती है। राजेंद्र यादव की 'केकड़े और मकड़ियां' तथा 'मछलियां' कहानियों में पति/प्रेमी के पर स्त्रीगामी होने पर नायिका चुप न बैठकर विरोध करती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

बदलते समय संदर्भ में नारी को वे सभी अधिकार चाहिए जो समाज में पुरुषों के लिए सुरक्षित रखे हैं। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'बिछुड़े हुए...' में चंदा अपने पति के दायित्वों से भागकर सन्यासी बन जाने पर परिवार के पालन पोषण का दायित्व वहन करती है। बीस वर्षों उपरांत जब जटा जूट बढ़ाए जोगिया चादर धारण किए उसका पति गांव पहुंचता है तब चंदा बेटी मंगना के विवाह की तैयारी कर रही थी। पति को देखकर वह ना रोती है, न कलपती है, ना विनती करती है। वह उसे पहचानने से ही मना कर देती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी के उस बदलते स्वरूप को देखा जा सकता है जो समय के साथ और संवेदनशील हो गई है। 'रिजक' कहानी की लल्लन को सरकार प्रशिक्षित करती है जिससे वह ग्रामीण महिलाओं का प्रसव ठीक से कर सके। उसका पति सरकारी नौकरी की मांग करता है ना मिलने पर वे हड़ताल कर देते हैं इस कारण मास्टर की बहू प्रसव वेदना से तड़प कर मर जाती है। लल्लन कुछ न कर सकने से परेशान होती है। कपूरी कक्का की बहू की प्रसव के समय उसकी परेशान बढ़ने लगती है। वह जच्चा-बच्चा दोनों की रक्षा करती है। ऐसे में हम लल्लन की संवेदना को प्रेमचंद की मंत्र कहानी की संवेदना से जोड़कर देख सकते हैं। पुष्पा जी की 'बोझ' कहानी में कामकाजी महिलाओं की विवशता; 'ललमनियां' कहानी में पुरुष द्वारा चली गई नारी की करुणा; तथा छांह, बेटी, तुम किसकी हो बिन्नी? कहानियों में नारी संवेदना के विविध पक्षों को देखा जा सकता है।

कृष्णा सोबती के 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास की रतिका (रत्ती) बचपन में बलात्कार की शिकार होती है और जीवन भर उस विष के दंश को झेलती है। उसे लगता है कि वह अच्छी लड़की या औरत नहीं है। 'वह जब जलेगी धुंआ ही देगी'। इसके विपरीत ममता कालिया की 'बेघर' कहानी की संजीवनी विवाह पूर्व के प्रेमी परमजीत की उपेक्षा से टूटती नहीं है। उसे एक बुरा सपना समझकर आगे बढ़ने का प्रयास करती है।[13,14,15]

कृष्णा सोबती की 'मित्रों मरजानी' उपन्यास की मित्रो पति से बेझिझक अपने असंतोष को अभिव्यक्त करती है। प्रभा खेतान की 'पीली आंधी' की सोमा पति की उपेक्षा की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रोफेसर सुजीत के बच्चे को जन्म देती है और उसी के साथ रहने लगती है। इन सभी स्त्रियों ने अपने पति को परमेश्वर ना मानकर अपने जीवन का सहयात्री माना है। ये अपने पति के अहंकार को चुनौती देने में भी पीछे नहीं हटतीं। प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया अपने को पहचानने के लिए व्यापार करने लगती है। जब उसका पति उससे अलग होने की धमकी देता है तो वह इस चुनौती को स्वीकार कर अपने अस्तित्व की रक्षार्थ पति ही नहीं बच्चे को भी छोड़ देती है। शशि प्रभा शास्त्री के उपन्यास 'नावें' की नायिका मालती अपने प्रेमी सोम की बच्ची को जन्म देती है किंतु उसकी उपेक्षा सहकर टूटती बिखरती नहीं अपितु दूसरे पुरुष से विवाह कर अपनी बच्ची को बड़ा करती हैं। आधुनिक नारी को परंपराओं में विश्वास नहीं रह गया। वे अपने लिए नए मूल्यों को तलाशने लगीं। राजेंद्र यादव की कहानी 'एक कटी हुई कहानी' की कुलवंत पुरुषों सदृश्य व्यवहार करने लगती है। कमलेश्वर के 'वही बात' उपन्यास में समयाभाव के कारण आई संबंधों में दरार समीरा और प्रशांत को एक दूसरे से अलग कर देती है। समीरा पुनः विवाह करती है किंतु नकुल को भी पूरी तरह अपना नहीं पाती। मानसिक द्वंद्व में जीती रहती है। वह एक आधुनिक नारी है जो अपने संबंधों में किसी प्रकार का दुराव छिपाव रखना पसंद नहीं करती अतः अपने विवाहेत्तर संबंधों को स्पष्ट शब्दों में अपने पति से कह देती है। मैत्रेयी पुष्पा की 'पगला गई है भागवती' की भागो अपने ठाकुर जीजा पर पत्थरों की बौछार करती है क्योंकि उसका जीजा उस परंपरा का प्रतीक है जिसमें बेटे और बेटी के लिए अलग नियम हैं। बेटा गैर जाति की लड़की से विवाह करता है तो उसके समारोह में 5 गांव को न्योता भेजा जाता है किंतु उसी घर की लड़की अनुसुइया के योग्य शिक्षक के साथ विवाह करने व गर्भवती होने पर उसे ज़हर देकर मार दिया जाता है। भागो केवल एक स्त्री नहीं है वह संपूर्ण नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती है जो परंपरा से प्रश्न करती है, पारिवारिक व सामाजिक व्यवस्था में निर्णय लेना चाहती है।

आत्मनिर्भरता के साथ ही नारी में अपनी पहचान के लिए कुलबुलाहट, बेचैनी दिखाई देने लगी। वह कभी रिश्तों की गर्माहट को अनुभव करने का प्रयास करती हैं तो कभी उसमें रिश्तों से मुक्ति की छटपटाहट दिखाई देती है। कहीं वह पूर्ण समर्पित ग्रहणी है तो कहीं खुद को तलाशने में भटकती दिखाई देती है। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा मधुकर के साथ प्रेम विवाह करती है किंतु समय के साथ प्रेम कहीं खो जाता है और विवाह बंधन बोझ बन जाता है। वह अपने पूर्व पति जितेन की ओर आकर्षित होती है। कथांत में प्रेम और रिश्तों के बीच अपने अंदर की लेखिका से साक्षात्कार करती है। 'चित्तकोबरा' उपन्यास की नायिका कहती है- "नहीं मुझे मेरा नाम चाहिए। उसका अस्तित्व भले ही कुछ ना हो, फिर भी मुझे चाहिए। मेरी मुक्ति मुझे चाहिए। समर्पण का अधिकार मुझे चाहिए।" प्रभा खेतान की 'छिन्नमस्ता' की प्रिया पुरुष सत्तात्मक समाज के हर कर्मकांड को चुनौती दे देती है। वह नारी का अबला नहीं सबला बनने की पक्षधर है।" व्यवस्था को तोड़ने वाली औरत को जहां समाज सौ कोड़े लगाता है, वहीं पुरुष को मंच पर क्रांतिकारी कह कर बैठाता है। औरत हर तरह मरती है। लेकिन रोती हुई औरत मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे औरत की इस निष्क्रियता पर झुंझलाहट होती है।" कमलेश्वर के 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास में आधुनिक चकाचौंध में रिश्तों की गर्माहट बर्फ बन कर पिघल गई हैं। आर्थिक विषमता पारिवारिक संबंधों को भी विषाक्त कर देती है। श्याम लाल की पत्नी रश्मी आर्थिक स्थिति के कारण बेटी तारा के घर नौकरानी की तरह रहती है। रश्मी विवाह पूर्व बेटी तारा के गर्भवती होने को सामान्य मानती है। तारा आर्थिक रूप से स्वतंत्र है अतः वह

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

सबकी इच्छा के विरुद्ध हरवंश से ना केवल संबंध स्थापित करती है उससे विवाह भी करती है। मन्नू भंडारी की कहानियों और उपन्यासों में घर से बाहर निकल कर काम करने वाली समर्पित, संघर्षरत स्त्री की समस्याओं को लिपिबद्ध किया गया है। उनके दुःख, घुटन, कुंठा, सामाजिक अवस्था, मानसिक संघर्ष को उन्होंने यथार्थता के साथ अंकित किया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने नर-नारी संबंधों, नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व, नारी के अंतर्द्वंद, जीवन यथार्थ और आधुनिक बोध, अकेलापन, अजनबीपन को उभारा है। इनकी कथा नायिकाएं स्वत्व को खोजती हैं। 'गति का चुंबन' (कुंठा), 'एक कमजोर लड़की', (दुर्बलता) 'शमशान' (जीजिविषा), 'कील' (बेमेल विवाह का दुष्प्रभाव), 'कसक' (खीज), 'घुटन', (विवाहिता जीवन की विवशता), 'चश्मे' (पति पत्नी के दृष्टिकोण में भिन्नता), 'अकेली' (अकेलेपन का बोध) 'आकाश के आईने' (संयुक्त परिवार की समस्या), 'मजबूरी' (पीढ़ियों का अन्तराल), 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' (वैवाहिक संबंधों में टूटन), 'क्षय' (आत्मसम्मान और सम्पन्न वर्ग के मध्य के संघर्ष), इसी प्रकार की सशक्त कहानियां हैं। 'क्षय' की कुंती, 'एखाने अकाश नाई' की सुषमा पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन सहर्ष करती हैं किंतु जब उन्हें यह अनुभव होता है कि परिवार के सदस्य उन्हें कमाऊ मशीन मात्र समझते हैं तो वे विद्रोह कर उठती हैं। मन्नू भंडारी की नारी पात्राएं आधुनिक बोध से संपन्न, अपने अधिकारों के लिए जागरूक, महिलाएं हैं। 'शायद' कहानी की माला पति की सीमित आय में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए इतनी व्यस्त हो जाती है कि संबंधों में बिखराव आने लगता है। 'दीवार, बच्चे और बरसात' कहानी की किराएदारिन पुरुष अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करती है। कमलेश्वर के उपन्यास काली आंधी की नायिका महत्वाकांक्षी और सत्ताकांक्षी मालती राजनीतिक दांवपेच खेलकर निरंतर सफलता प्राप्त करते हुए उच्च वर्ग में सम्मानित जीवन जीने लगती है। उसका और जग्गी बाबू का अहम् निरंतर टकराता रहता है। अपने घर परिवार को छोड़कर वह भी खुश नहीं रह पाती किंतु अपनी आकांक्षाओं के आगे उसे कुछ समझ नहीं आता।

नए युग की नई नारी ने एकनिष्ठ प्रेम या आदर्श प्रेम की परिभाषा को भी अपने लिए बदल लिया। विवाहेत्तर संबंधों में उसे संकोच या अपराध बोध की अनुभूति नहीं होती। मन्नू भंडारी ने प्रेम के इस नए दृष्टिकोण का 'यही सच है' में यथार्थ अंकन किया है। अब वह अपनी इच्छाओं के विषय में भी सोचने लगी थी। मैं से मैं क्यों हूं? की यात्रा करना उसने शुरू कर दी थी। निर्मल वर्मा की 'परिंदे', राजेंद्र यादव की 'जहां लक्ष्मी कैद है', मोहन राकेश की 'मिस पॉल'। 'जहां लक्ष्मी कैद है' और 'मिस पॉल' कहानियों में रागात्मक संबंधों को जीवन की अनिवार्यता के रूप में चित्रित किया गया है। यौन शुचिता के प्रश्नों, इच्छा अनिच्छा के एकांकी दृष्टिकोण ने स्त्री जीवन को नारकीय बना दिया था। महिला लेखिकाओं ने इस विषय को भी अपनी कहानियों में छुआ है।

समाज में निरंतर दोयम स्थिति जीवन जीते हुए स्वतंत्र नारी में व्यक्तिवादी दृष्टिकोण पनपने लगा उसके लिए स्वयं की इच्छाएं सुख अधिक महत्वपूर्ण हो गया। मन्नू भंडारी की 'यही सच है', निर्मल वर्मा की 'परिंदे', मोहन राकेश की 'एक और जिंदगी', कमलेश्वर की 'जो लिखा नहीं जाता' इत्यादि कहानियों में इसी तथ्य को उभारा गया है। राजेंद्र यादव की कहानी 'चालीस साल बाद' में रमा को जब पता चलता है कि उसका पति उसे मातृ सुख देने में असमर्थ है तो वह अपने पुराने मित्र को इस उद्देश्य से अपने घर बुला लेती है। विडंबना यह है कि उस मित्र को लेने के लिए उसका पति ही स्टेशन पर जाता है। 'नया फ्लैट', 'चालीस साल बाद', 'मरा हुआ चूहा' आदि कहानियों में उन्होंने उन्मुक्त संबंधों का संसार सृजित करते हैं। कमलेश्वर की 'तलाश' कहानी की कॉलेज प्राचार्या मम्मी 8 वर्षों से वैधव्य का दुःख झेलने के लिए बाध्य थीं किन्तु इच्छाओं के वशीभूत होकर वे कॉलेज के कर्मचारी के साथ प्रेम संबंध बना लेती हैं। 'तीन दिन पहले की रात' कहानी की नायिका मीना के दिवाकर, जितेन, अमर तीन प्रेमी हैं। अमर के साथ विवाह करने के बाद भी वह पूरी तरह उसके प्रति समर्पित नहीं रह पाती। कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया' कहानी में दो कहानियां समानांतर चलती हैं। राजा निरबंसिया की और जगपति तथा चंदा की। राजा और जगपति अपनी पत्नियों को मातृ सुख देने में असमर्थ हैं। परिस्थितियों के परिणामस्वरूप रानी और चंदा दोनों ही पर पुरुषों से मातृ सुख प्राप्त करती हैं। रानी के सतीत्व की रक्षा करने के लिए कुलदेवता सामने आते हैं। किसी की हिम्मत नहीं होती कि रानी की निंदा कर सकें। दूसरी ओर पति को आर्थिक कठिनाई से उबारने के लिए चंदा बदनामी का पात्र बनती है किंतु उसी पति द्वारा अपमानित किए जाने पर वह अपने पिता के घर चली जाती है तथा किसी दूसरे व्यक्ति के साथ विवाह करने की बात सोचने लगती है। दोनों ही स्त्री पात्रों में नैतिकता को लेकर किसी भी प्रकार का संशय नहीं है। निरुपमा सोवती की 'सबमें से एक' तथा मन्नु भंडारी की कहानी 'ऊंचाई' यौन शुचिता को अस्वीकार कर उसे सहज देह धर्म मानती हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यास 'चित्तकोबरा' के मनु और रिचर्ड में विवाहेत्तर प्रेम संबंध में हैं। अन्त में मनु मदर टेरेसा से प्रभावित होकर समाजसेविका बन जाती है।

मृदुला गर्ग के अनुसार -"प्रेम की अनुभूति आध्यात्मिक अनुभूति है। एक से नि:स्वार्थ, पूर्ण समर्पित प्रेम करने पर, अहम का जो धीरे-धीरे हनन होता है वह व्यक्ति को उस बिंदु पर पहुंचा देता है, जहां से बढ़कर मानव से प्रेम के आदर्श तक पहुंचना एक कदम आगे बढ़ना जैसा रह जाता है।" (आधुनिक एवं हिन्दी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप, सम्पादक डॉ. मुदिता चन्द्रा, डॉ. सुलक्षणा टोप्पो में संकलित लेख- भारतीय समाज अमृत सागर के नारी पात्र, शशि कला सिन्हा, पृष्ठ 165)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

अकारण संदेह किस प्रकार से दाम्पत्य जीवन को विषाक्त कर देता है यह कमलेश्वर के उपन्यास 'तीसरा आदमी' में देखा जा सकता है। उपन्यास दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति के आने से उत्पन्न बिखराव को उजागर करता है। शंकालु नरेश को लगता है कि उसकी पत्नी चित्रा उसके दूर के भाई सुमन्त से प्रेम करती है। रागात्मक संबंधों में भी उसे सुमन्त की उपस्थिति विद्यमान अनुभव होती है। भावात्मक दूरियां शारीरिक दूरियों में बदल जाती हैं। चित्रा पति के संदेह से तंग आकर नौकरी करने का निर्णय लेती है। आधुनिक नारी विवाह संबंध में घुट-घुटकर जीने की अपेक्षा अपने प्रति उदासीन पुरुष से संबंध विच्छेद करना अधिक उचित मानती है। मन्नू भंडारी की 'बंद दराजों का साथ' कहानी की मंजरी दाम्पत्य जीवन में विश्वास को महत्वपूर्ण मानती है अतः विपिन और दिलीप दोनों से विवाह विच्छेद करने में संकुचित नहीं होती। परिणाम

पूरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाली सशक्त नारियों को 'बड़े घर की बेटी' (प्रेमचंद), 'पुरस्कार' (जयशंकर प्रसाद), 'जहां लक्ष्मी कैद है' (राजेंद्र यादव), 'छुट्टी का एक दिन' (उषा प्रियंवदा), 'मित्रो मरजानी' (कृष्णा सोबती), 'यही सच है' और 'ऊंचाई' (मन्नु भंडारी) की कथा नायिकाओं में देखा जा सकता है। आधुनिक साहित्य में वर्णित महिलाएं स्टीरियोटाइप नारियों से भिन्न हैं जो अपने साथ होने वाले दुर्व्यवहार के आतंक से इस सीमा तक ग्रसित हैं कि अपने जीवन के स्वस्थ विकास को स्वयं ही अवरुद्ध कर देती हैं। वे शैक्षिक क्षेत्र में पुरुषों की समकक्षता तो कर ही रही हैं आर्थिक दृष्टि से भी स्वाबलंबी हैं। मन्नू भंडारी की 'यही सच है' और 'ऊंचाई' कहानियों की नायिकाएं अपने जीवन के यथार्थ को पकड़ कर समाज से साक्षात्कार करना चाहती हैं। उन्हें अपने लिए काल्पनिक इन्द्रधनुषी रंगों से सजा आकाश नहीं चाहिए। वे वर्तमान को उसकी अंतिम बूंद तक जीना चाहती हैं। जीवन के तिक्त और मधुर अनुभवों को स्वयं अनुभव करना चाहती हैं। बिना किसी लकड़ी के डगमगाते हुए ही क्यों न हो अपनी मंजिल तक पहुंचना चाहती हैं।[16,17,18]

सेना में कार्यरत स्त्रियों के साहस साहित्य के पृष्ठों में भरे हुए हैं। 26 जनवरी की परेड में अपनी टुकड़ी को निर्देशित करती महिला अफसर को सहज विस्मृत नहीं किया जा सकता। वे बिना डरे अपना जीवन जीती हैं और उन स्त्रियों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत हैं जो अभी भी कूप मंडूक जीवन जी रही हैं।[22,23,24]

नारी विमर्श ने भी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है। चाहे वह सौ प्रतिशत रहा है या थोड़ा कम किंतु व्यर्थ का शोर तो नहीं ही रहा। आज का साहित्य हमें ऐसी जीवट नारियों से साक्षात्कार कराता है जिनका जीवन सहज नहीं रहा किंतु अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं को पीछे छोड़ में निरंतर आगे बढ़ती गई और अंततः अपने लक्ष्य तक पहुंचीं। इन्होंने डर को भी डराया और अपने ऊपर अत्याचार करने वाले समाज को भी नतमस्तक होने के लिए बाध्य किया। इन्होंने अपने ऊबड़ खाबड़ जीवन को ही समतल नहीं बनाया बल्कि अन्य के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत, मार्गदर्शिका, आकाशदीप और आशा की किरण बनीं। इनके कार्यक्षेत्र भिन्न हैं किंतु सबकी भावनाएं एक सी हैं।[19,20,21]

निष्कर्ष

साहित्य में इनकी छवि को साहित्यकारों ने रेखांकित किया है। आज की नारी आत्मनिर्भर है। उसमें कुछ कर गुजरने का साहस है। अगर वो जर्जर रुढ़ियों का विरोध करती है तो अपने लिए नए आकाश का निर्माण भी करना जानती है पर पुरुष से अलग होकर नहीं उसके साथ। ये किसी से डर कर नहीं सब से मिलकर रहना चाहती हैं।[25]

संदर्भ

1. बाहरी, डॉ॰ हरदेव (१९८६). साहित्य कोश, भाग-2,. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड. पृ॰ ३५७.
2. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 20. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
3. ↑ यह उपन्यास उर्दू साप्ताहिक 'आवाजे खल्क' में 8 अक्टूबर 1903 से 1 फ़रवरी 1905 तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक का नाम छपा था- मुंशी धनपतराय उर्फ नवाबराय इलाहाबादी। बाद में स्वयं प्रेमचंद ने इसका हिन्दी तर्जुमा 'देवस्थान रहस्य' नाम से किया, जो उनके पुत्र अमृतराय द्वारा उनके आरंभिक उपन्यासों के संकलन 'मंगलाचारण' में संकलित है।
4. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 21. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
5. ↑ NEWS, SA (2022-07-30). "Munshi Premchand Jayanti (मुंशी प्रेमचंद जयंती): 'गोदान' उपन्यास के रचयिता प्रेमचंद के बारे में जाने सम्पूर्ण जानकारी". SA News Channel (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-07-30.

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 7, Issue 1, January 2024 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2024.0701016 |

6. ↑ सिंह, डॉ॰बच्चन (1972). प्रतिनिधि कहानियाँ. वाराणसी: अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी, चौक. पृ॰ 9.
7. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 616-17.
8. ↑ वीर भारत, तलवार (2008). किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द:1918-22. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. पृ॰ 19-20.
9. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 618.
10. ↑ अमृतराय (1976). प्रेमचंद क़लम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन. पृ॰ 619.
11. ↑ डॉ कमल किशोर गोयनका (संपादक)- "प्रेमचंद कहानी रचनावली", 6 भागों में, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, भूमिका (भाग-१)
12. ↑ प्रेमचंद (१९३८). सप्तसरोज. ज्ञानवापी, काशी: हिन्दी पुस्तक एजेंसी. पृ॰ 1.
13. ↑ हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ॰ रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006, पृष्ठ संख्या- 518
14. ↑ Desk, India com Hindi News. "जब प्रेमचंद ने लिखा पहला नाटक और मामा ने कर दिया गायब, पढ़िए 'कलम का सिपाही' की पहली कहानी". India News, Breaking News, Entertainment News | India.com. अभिगमन तिथि 2020-08-01.
15. ↑ "कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया था मुंशी प्रेमचंद". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-07-31.
16. ↑ "रचना दृष्टि की प्रासंगिकता -मन्नू भंडारी" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 7 अगस्त 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
17. ↑ "'हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक थे प्रेमचंद'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 27 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
18. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 13. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
19. ↑ "'स्वस्थ साहित्य किसी की नक़ल नहीं करता'" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 28 सितंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 9 मार्च 2008.
20. ↑ रामविलास, शर्मा (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ॰ 185. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0505-4.
21. ↑ "Oka Oori Katha" (अंग्रेज़ी में). मृणालसेन.ऑर्ग. मूल से 6 जनवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जुलाई 2008.
22. ↑ "हिंदी दिवस: हिंदी का यह लायक बेटा कभी निराश होकर फ़िल्म इंडस्ट्री छोड़ लौट गया था". Dainik Jagran. अभिगमन तिथि 2020-08-01.
23. ↑ "PREM CHAND WRITER" (पीएचपी) (अंग्रेज़ी में). इंडियन पोस्ट. मूल से 6 अप्रैल 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जून 2008.
24. ↑ "लमही में शोध संस्थान बनेगा" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 27 मई 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जून 2008.
25. ↑ प्रेमचंद मुंशी कैसे बने- डॉ॰ जगदीश व्योम, सिटीजन पावर, मासिक हिन्दी समाचार पत्रिका, दिसम्बर २०११, पृष्ठ संख्या- ०९

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor

7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com